दादी प्रकाशमणि की नज़रों में बाबा

दुनिया में कितना दु:ख-दर्द है, लड़ाइयां है, हिंसा है, पापाचार है तो लगता जैसे बाबा को बच्चों का दु:ख सहन नहीं होता। यह सब देख बाबा कहते - बस, इस पुरानी दुनिया को तो करो परिवर्तन। अब जल्दी इसका विनाश हो तो नई दुनिया आये जहां सब मेरे बच्चे सद्गति को प्राप्त करें, इस विश्व का नव निर्माण हो, यह दुनिया स्वर्ग बन जाये। सब धर्म वाले वापस अपने घर चलें। सबको मुक्ति मिले। बच्चों को जीवनमुक्ति मिले। सबको बाप का परिचय मिले। बाप से सबका संबंध जुटे। यह थी मंसा हमारे बाबा की।

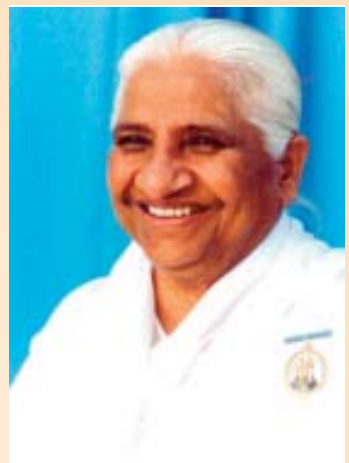

दादी प्रकाशमणि

निराकार को कहते हैं कि वह आनंद का सागर है लेकिन हमने ब्रह्मा बाबा को सदा आनंद के अथाह सागर में लहराता हुआ देखा। इतना बाबा आनंद में रहता था जैसे विष्णु को क्षीर सागर में बड़े आनंद से लेटा हुआ दिखाते हैं। कोई चिंता नहीं। इतने बच्चे होते भी मैं अकेला हूँ। बाबा सदा ऐसे रहता जैसे बेगमपुर का बेफिक्र बादशाह है।

- विश्व कल्याण के लिए सब धर्म की, सारे विश्व की आत्मायें बाबा के सामने होती थी। सब बाप से वर्सा लें, कोई भी वंचित न रहे, सभी बच्चे अंधकार से निकल रोशनी में आ जायें, इतना बाबा को बच्चों के लिए ओना रहता था।

- शिव बाबा को विघ्न विनाशक कहते हैं और मैंने साकार में बाबा को सदा विघ्न-जीत पाया। कोई भी प्रकार का कैसा भी विघ्न आया, बाबा कहेगा - बच्ची, कोई बड़ी बात नहीं, नथिंग न्यु। यह भी ड्रामा। बाबा एक सेकण्ड में बिंदु लगा देता। बाबा के मस्तक पर कभी रिंचक मात्र भी फिकरात का चिह्न नहीं देखा। पानी पर लकीर की तरह आया और चला गया। कोई भी विघ्न आये, चाहे बांधेले रहे, वारंट निकले, चाहे समाज बिगड़ा, सरकार बिगड़ी, लौकिक संबंधी बिगड़े, अलौकिक ने विघ्न डाले - कुछ भी हुआ लेकिन बाबा को एकदम ऊंची चोटी पर देखा।

- बाबा साधारण से साधारण कर्म करते भी सदा ऊंचे नशे में रहते थे। बाबा को मैंने कभी नीचे आया हुआ नहीं देखा। खाना-पीना, घूमना-फिरना बच्चों को पत्र लिखाना, डायरेक्शन देना - सब कुछ करते सदा देखो तो ऊंचे ते ऊंचा बाबा अपनी ऊंची स्थिति में है। हम बाबा को अनेकानेक बार देखती थी जैसे ज़मीन से आसमान तक बाबा ही हो जिसका मैं माप नहीं कर सकती। बाबा के मस्तक पर सदैव लाइट का ग्लोब जैसे चमकता था। ऐसे अनुभव होता जैसे बहुत शीतल मीठा सवेरे के सूरज की तरह चमक रहा हो और बाबा के मस्तक से चंद्र की चमकती हुई शीतल किरणें निकल रही हों।

- बाबा सदा परोपकारी थे। कितना भी कोई अपकार करे लेकिन बाबा सदैव मीठी दृष्टि से अपकारी पर भी उपकार करते। बाबा की नज़र में कभी अपकार की या बदला लेने की भावना उत्पन्न ही नहीं होती। बाबा ने दुश्मन को भी मित्र समझा। निंदा करने वाले को भी मित्र समझकर गले लगाया। कभी कोई बाबा के पांव में झुकता तो बाबा को जैसे सहन नहीं होता। बाबा कहते - तुम बच्चे तो मेरे गले की माला हो, मैं तुम बच्चों को गले लगाता हूँ, तुम पांव क्यों पड़ते हो?

- बाबा सत्यता का अवतार था। निराकार भगवान को कहते 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' लेकिन हमने तो ब्रह्मा बाबा को सदा सत्यता की अथॉरिटी देखा। बाबा हमेशा कहते - बच्चे, जहां सत्यता है वहां जीत है। सच तो बिठो नच। बाबा बच्चों को शिक्षा देते - बच्चे बाप से कुछ भी छिपाओ नहीं। सदा सच्चे रहो। कभी बाबा के मुख से हेर-फेर युक्ति, झूठ शब्द नहीं सुने। बाबा को सदा निर्भय, निर्वै, निरहंकारी, निर्विकारी, निराकारी देखा।

- हमने तो बाबा को प्रैक्टिकल में मर्यादा पुरुषोत्तम देखा। तुम समाज में रहते उनसे पूरा निभाओ। अगर कोई गाली भी दे तो तुम उन पर फूल चढ़ाओ, इतना एक-दूसरे को सम्मान दो। छोटे बच्चों को भी बाबा स्वयं इतना सम्मान देते थे। बाबा कहते - यह छोटे बच्चे तो सुभान अल्लाह हैं। बच्चे तो महात्मा होते हैं।

इस तरह से हर कदम में हर प्रकार से बाबा ने हम बच्चों की वरदानों से पालना की। वरदानों से ही पाला। तो हमारा अनुभव कहता है कि हमने तो साकर में भगवान को पाया। निराकार तो शिव बाबा है, ब्रह्मा बाबा साकार है। लेकिन साकार में हमने सब कुछ पाया। तो ऐसे मीठे बाबा को पूरा फॉलो कर हमें भी उनके समान बनना है। लौकिक में रहते सब कुछ निभाते ऐसा दिव्य फरिश्ता बनना है। बाबा के समान अपना तन, मन, धन सब सफल करके भविष्य 21 जन्मों के लिए श्रेष्ठ भाग्य बनाना है। बाबा समान सदा अथक बन दधीचि ऋषि की तरह यज्ञ की प्यार से हड्डी सेवा करनी है। सदा हर्षित और प्रसन्नचित्त रहना है।

समेटने की शक्ति का ज़बरदस्त उदाहरण

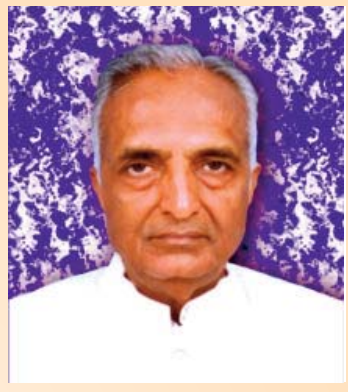

-ब्र.कु. रमेश शाह,अतिरिक्त सचिव,ब्रह्माकुमारीज़

एक बात मैंने पिताश्री जी से सीखी। शिव बाबा ने योग के द्वारा जो आठ शक्तियां प्रदान की हैं उसमें समेटने की शक्ति एक शक्ति है। समेटने की शक्ति दुनिया के हर एक व्यक्ति को अपने व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन में अपनानी पड़ती है। जैसे लौकिक दुनिया में हर एक व्यक्ति को शरीर तो छोड़ना ही है परन्तु उसके पहले अपने कारोबार को समेटना ज़रूरी है। कानूनी दृष्टिकोण से समेटने की बात कैसे प्रश्न उत्पन्न कर सकती है उसके मैंने कई उदाहरण अपने व्यावसायिक जीवन में देखे हैं। चाहते हुए भी एक व्यक्ति, देह छोड़ने के पूर्व, अपना कारोबार संपूर्ण रूप से समेट नहीं सकता। चाहे वह व्यक्ति एक छोटे से परिवार का कर्ता-धर्ता हो या कोई छोटे-बड़े व्यापार का मालिक हो या कोई छोटे-बड़े मंदिर अथवा आश्रम का मुखिया हो। परन्तु सभी जगह पर समेटने की शक्ति का यथार्थ उपयोग न होने के कारण व्यक्ति अपने पीछे अनेक प्रकार की समस्याएं औरों के लिए छोड़ जाता है। और इसीलिए देखा गया है कि कई बड़े-बड़े घरों में इसी के कारण कई समस्याएं खड़ी हो जाती हैं।

परन्तु ब्रह्मा बाबा के व्यक्तिगत जीवन में मैंने देखा कि बाबा ने अपने व्यक्तिगत जीवन की हर एक बात इतनी सुन्दर रीति से समेटी हुई थी कि उनके पश्चात् किसी को, कोई भी प्रकार की समस्या उत्पन्न नहीं हुई। इसी तरह से इतने बड़े ईश्वरीय विश्व विद्यालय का भविष्य में संचालन कैसे हो, उसके बारे में हर प्रकार का स्थूल एवम् सूक्ष्म मार्ग-दर्शन बाबा ने दिया था। जिस कारण बाद में उस रास्ते पर चलने वाले अनुयायियों को कोई समस्या नहीं आई, इतना ही नहीं बल्कि कोई कानूनी, आर्थिक, व्यावहारिक व आध्यात्मिक प्रश्न उत्पन्न नहीं हुए। यह एक समेटने की शक्ति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण साकार बाबा के जीवन से हमें मिलता है।

हमें भी यह देह, देह के सम्बन्ध, व्यवहार तथा कारोबार छोड़ना ही है। अतः क्यों नहीं हम ऐसा अपना कारोबार समेट लें कि पीछे हम अन्य किसी के लिए समस्या न बनें तथा और कोई हिसाब न रह जाए जिसको चुक्तू करने के लिए नया जन्म लेना पड़े या धर्मराजपुरी में जाकर सज़ा खानी पड़े। जिस तरह से ब्रह्मा बाबा ने अपना सारा ही कारोबार समेटा, ऐसे ही हमें भी अपना सभी प्रकार का कारोबार समेटने में पूर्ण रूप से सफलता मिले - यही शिक्षा लेकर सबसे बड़ी श्रद्धांजली हम ब्रह्मा बाबा को दे सकेंगे।